

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [श्री जगन्नाथ स्वामी रथ यात्रा](#) समिति कीडगंज के तत्त्वावधान में परयागराज में भगवान जगन्नाथ स्वामी जी की भव्य रथ यात्रा का आयोजन किया गया।

मुख्य बटु:

- रथ यात्रा कीडगंज में **त्रविणी मार्ग** स्थिति **श्री जगन्नाथ मंदिर** से शुरू हुई।
 - भगवान जगन्नाथ के नंदीघोष रथ के अलावा गुरुदेव, बदरी वशाल, भगवान राम और भगवान द्वारकाधीश के रथ भी शोभायात्रा का हिस्सा रहे
 - रथयात्रा में राधा कृष्ण, नरसहि अवतार और दामोदर लीला को दर्शाती झांकियाँ भी शामिल रही।
- **जगन्नाथ रथ यात्रा एक वार्षिकि हट्टि त्योहार** है जो **भगवान जगन्नाथ**, उनके बड़े भाई **भगवान बलभद्र** और उनकी छोटी बहन **देवी सुभद्रा** की **ओडशा के पुरी** में उनके **घरेलू मंदिर** से लगभग तीन किलोमीटर दूर गुंडचि में उनकी मौसी के मंदिर तक की यात्रा का उत्सव मनाता है।
 - इस त्योहार के पीछे **कविदंती** है कि एक बार देवी सुभद्रा ने गुंडचि में अपनी मौसी के घर जाने की इच्छा व्यक्त की।
 - उनकी इच्छा पूरी करने के लिये **भगवान जगन्नाथ और भगवान बलभद्र ने उनके साथ रथ यात्रा पर जाने का नरिणय किया।** इस घटना को प्रतावर्ष देवताओं को इसी तरह की यात्रा पर ले जाकर मनाया जाता है।
- इस त्योहार की शुरुआत **कम-से-कम 12वीं शताब्दी ई. से हुई है, जब राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव ने जगन्नाथ मंदिर का नरिमाण करवाया था।** हालाँकि कुछ स्रोतों से पता चलता है कि यह त्योहार प्राचीन काल से ही प्रचलति था।
- इस त्योहार को **रथों के त्योहार** के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि देवताओं को **तीन वशाल लकड़ी के रथों पर ले जाया जाता है, जनिहें भक्त रस्सियों से खींचते हैं।**
- यह आषाढ (जून-जुलाई) माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को शुरू होता है और नौ दिनों तक चलता है।

जगन्नाथ पुरी मंदिर



- यह भारतीय राज्य ओडिशा के सबसे प्रभावशाली स्मारकों में से एक है ।
- यह मंदिर "**सफेद पैगोडा**" के नाम से जाना जाता है और यह चार धाम तीर्थयात्राओं (बदरीनाथ, द्वारका, पुरी, रामेश्वरम) का एक हिस्सा है ।
- यह **कलिंग वास्तुकला** का एक शानदार उदाहरण है, जो घुमावदार मीनारों, जटिल नक्काशी और अलंकृत मूर्तियों से पहचाना जाता है ।
- मंदिर परिसर चारों ओर से ऊँची दीवार से घिरा हुआ है तथा इसके चारों दशाओं की ओर चार द्वार हैं ।
- मुख्य मंदिर में चार संरचनाएँ हैं: **वमिन (गर्भगृह)**, **जगमोहन (सभा कक्ष)**, **नट-मंदिर (उत्सव कक्ष)** और **भोग-मंडप (अर्पण कक्ष)** ।
- जगन्नाथ पुरी मंदिर को '**यमनिका तीर्थ**' कहा जाता है, जहाँ हद्वि मान्यताओं के अनुसार, भगवान जगन्नाथ की उपस्थिति के कारण पुरी में मृत्यु के देवता '**यम**' की शक्ति समाप्त हो गई है ।